विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
१	धवलाकारका मंगलाचरण	१
२	वेदना अधिकारके अन्तर्गत १६ अनुयोगद्वारोंका निर्देश	,,
	१ वेदनानिक्षेप	
१	नामवेदना आदि चार प्रकारकी वेदनाका स्वरूप व उसके उत्तरभेद	५
	२ वेदना-नयविभाषणता	
१	उपर्युक्त नामवेदना आदिमेंसे किस किस वेदनाको कौन कौनसे नय विषय करते हैं, इसका विवेचन	९
	३ वेदनानामविधान	
१	नैगमादि नयोंकी अपेक्षा वेदनाके भेद व उनका स्वरूप	१३
	४ वेदनाद्रव्यविधान	
१	वेदना-द्रव्यविधानके अन्तर्गत पदमीमांसा आदि ३ अनुयोगद्वारोंका निर्देश	१८
२	इन ३ अनुयोगद्वारोंके अतिरिक्त संख्या व गुणकार आदि अन्य ५ अनुयोगद्वारोंकी सम्भावनाविषयक शंका व उसका परिहार	१९
	पदमीमांसा	२०–३०
३	पदमीमांसामें द्रव्यकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय-वेदनाविषयक उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट आदि पदोंकी प्ररूपणा	२०
४	शेष सात कर्मोंसे सम्बद्ध उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट आदि पदोंकी प्ररूपणा	२९
	स्वामित्व	३०–३८४
५	स्वामित्वके उत्कृष्ट व अनुत्कृष्ट पदविषयक २ भेदोंका निर्देश	३०
	उत्कृष्ट ज्ञानावरणवेदना	३१–२२४
६	बादर पृथिवीकायिक जीवोंमें अवस्थान	३२
७	उनमें परिभ्रमण करते हुए पर्याप्त भवोंकी अधिकता और अपर्याप्त भवोंकी अल्पताका निर्देश	३५
८	वहांपर पर्याप्त कालकी दीर्घता और अपर्याप्त कालकी ह्स्वताका उल्लेख	३७
९	तत्प्रायोग्य जघन्य योगसे आयुके बांधनेका विधान	३८
१०	अधस्तन स्थितियोंके निषेकका जघन्य पद और उपरितन स्थितियोंके निषेकका उत्कृष्ट पद करनेका विधान	४०
११	बहुत बहुत वार उत्कृष्ट योगस्थानोंकी प्राप्तिका निर्देश	४५
१२	बहुत बहुत वार बहुत संक्लेश रूप परिणामोंसे परिणत होनेका विधान	४६
१३	एकेंद्रियोंमें त्रसस्थितिसे रहित कर्मस्थिति तक परिभ्रमण करनेके पश्चात् बादर त्रस पर्याप्त जीवोंमें उत्पन्न होनेका उल्लेख	,,
१४	त्रसोंमें परिभ्रमण कराते हुए छह आवासोंकी प्ररूपणा	५०
१५	इस प्रकार परिभ्रमण करते हुए उसके अन्तिम भवमें सातवीं पृथिवीमें उत्पन्न होनेका उल्लेख	५२
१६	वहांपर उत्कृष्ट योगके द्वारा आहारग्रहणादिका नियम	५४
१७	योगयवमध्यप्ररूपणामें प्ररूपणा-प्रमाणादि ६ अनुयोगद्वार	६१

क्रम	विषय	पृष्ठ
१८	अनन्तरोपनिधामें अवस्थित-भागहारादि ४ भागहारोंके द्वारा योगस्थानजीवोंका प्रमाण	६६
१९	परम्परोपनिधामें प्ररूपणा, प्रमाण और अल्पबहुत्व इन ३ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख	७४
२०	अवहारकालकी प्ररूपणा	७६
२१	भागाभाग व अल्पबहुत्वका कथन	९५
२२	अन्तिम गुणहानिस्थानान्तरमें रहनेका कालप्रमाण	९८
२३	नारकभवके अन्तिम समयमें स्थित होनेपर ज्ञानावरणीयकी उत्कृष्ट वेदनाका विधान	१०९
२४	संचित उत्कृष्ट ज्ञानावरणद्रव्यके उपसंहारकी प्ररूपणामें संचयानुगम भागहारप्रमाणानुगम और समय-प्रबद्धप्रमाणानुगम इन तीन अनुयोगद्वारोंमें संचयानुगमका निरूपण	१११
	भागहारप्रमाणानुगम	**११३-२०१**
२५	भागहारप्रमाणानुगममें प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगोंके द्वारा निषेक-रचनाका निरूपण	११४
२६	मोहनीयकी नानागुणहानिशलाकाओंका प्रमाण	११८
२७	ज्ञानावरणीयादि अन्य कर्मोंकी नानागुणहानिशलाकायें	११९
२८	नानागुणहानिशलाकाओंका अल्प-बहुत्व	१२०
२९	आठ कर्मोंकी अन्योन्याभ्यस्त राशिका अल्पबहुत्व	१२१
३०	संदृष्टिरचनापूर्वक समयप्रबद्धके अवहारकी प्ररूपणा	१२२
३१	भागाभाग व अल्पबहुत्वका कथन	१४१
३२	चारित्रमोहनीयकी क्षपणामें आई हुई ८ वीं मूलगाथा सम्बन्धी चार भापगाथाओंमेंसे तीसरी भाप-गाथाके अर्थकी प्ररूपणा	१४३
३३	कर्मस्थितिके द्वितीय समय-सम्बन्धी संचयका भागहार	१४४
३४	तृतीय समयमें बांधे गये समय-प्रबद्धके संचयका भागहार	१४७
३५	एक समय अधिक गुणहानि ऊपर जाकर बांधे गये समयप्रबद्धके सचयका भागहार	१६६
३६	दो समय अधिक गुणहानि ऊपर जाकर बांधे गये समयप्रबद्धके सचयका भागहार	१६८
३७	तीन समय आदिसे अधिक गुण-हानि ऊपर जाकर बांधे गये समयप्रबद्धके सचयका भागहार	१६९
३८	दो गुणहानि मात्र अध्वान जाकर बांधे गये द्रव्यके सचयका भागहार	,,
३९	एक समय अधिक दो गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार	१७०
४०	दो समय अधिक दो गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार	१७१
४१	तीन गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार	१७२

क्रम	विषय	पृष्ठ
४२	चार गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार	१७५
४३	पांच गुणहानियां जाकर बांधे गये द्रव्यका भागहार	१७८
४४	उक्त भागहारकी अन्य प्रकारसे प्ररूपणा	१८१
४५	आबाधाके भीतर बांधे गये समय-प्रबद्धोंके उत्कर्षण द्वारा नष्ट हुए द्रव्यकी परीक्षा	१९४
४६	ज्ञानावरणीयकी अनुत्कृष्ट द्रव्य-वेदनाका कथन करते हुए अनन्त भागहानि आदिका निरूपण	२१०
४७	गुणितकर्मांशिक, गुणितघोलमान, क्षपित-घोलमान और क्षपितकर्मांशिक जीवोंका आश्रय कर पुनरुक्त स्थानोंकी प्ररूपणा	२१६
४८	त्रस जीव योग्यस्थानों सम्बन्धी जीवसमुदाहारके कथनमें प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वार	२२१
४९	स्थावर जीव योग्य स्थानों सम्बन्धी जीवसमुदाहारके कथनमें प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वार	२२३
५०	आयुको छोडकर शेष दर्शनावरणीय आदि ६ कर्मोंके उत्कृष्ट-अनुत्कृष्ट द्रव्यकी प्ररूपणा	२२४
	आयु कर्मकी द्रव्यसे उत्कृष्ट वेदनाका स्वामित्व	**२२५-२४३**
५१	महाबन्धके अनुसार ८ अपकर्षों द्वारा आयुको बांधनेवालोंके आयु-बन्धक कालका अल्पबहुत्व	२२८
५२	सोपक्रमायु जीवोंमें परभविक आयुके बांधनेका नियम	२३३
५३	निरुपक्रमायु जीवोंमें परभविक आयुका बन्धनविधान	२३४
५४	आठ व सात आदि अपकर्षों द्वारा आयु-को बांधनेवाले जीवोंका अल्पबहुत्व	,,
५५	योगयवमध्यके ऊपर रहनेका कालप्रमाण	२३५
५६	चरम गुणहानिस्थानान्तरमें रहनेका कालप्रमाण	२३६
५७	क्रमसे कालको प्राप्त हुए उक्त जीवके पूर्वकोटि आयुवाले जलचर जीवोंमें उत्पन्न होनेका नियम बतलाते हुए आयुबन्धविषयक व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्रसे विरोधकी आशंका व उसका परिहार	२३७
५८	उक्त जीवके अन्तर्मुहूर्तमें सब पर्याप्तियोंसे पर्याप्त होनेका नियम	२३९
५९	आयु कर्मकी द्रव्यप्रमाणकी परीक्षा रूप उपसंहारकी प्ररूपणा	२४४
६०	आयु कर्मकी द्रव्यसे अनुत्कृष्ट वेदनाकी प्ररूपणा	२५५
६१	द्रव्यसे जघन्य ज्ञानावरणवेदनाके स्वामीका स्वरूप (सूत्र ४८-७५)	२६८
६२	द्वीन्द्रियादि अपर्याप्त जीवोंमें उत्पत्तिवारोंका प्रमाण	२७०
६३	द्वीन्द्रियादि पर्याप्त जीवोंकी आयु-स्थितिका प्रमाण	२७१
६४	निगोद जीवोंमेंसे मनुष्योंमें उत्पन्न हुए जीवोंके केवल सम्यक्त्व व संयमासंयमके ही ग्रहणकी योग्य-ताका उल्लेख	२७६

क्रम	विषय	पृष्ठ
६५	गर्भसे निकलके प्रथम समयसे लेकर आठ वर्षोंके वीतनेपर संयम-ग्रहणकी योग्यताका उल्लेख	२७८
६६	गर्भमें आनेके प्रथम समयसे लेकर आठ वर्षोंके वीतनेपर संयमग्रहण-की योग्यता विषयक आचार्यान्तरका अभिमत और उसकी असंगति	२७९
६७	गुणश्रेणिनिर्जराका क्रम	२८२
६८	भिन्न भिन्न पर्यायोंमें उत्पत्तिके योग्य मिथ्यात्वकालका अल्पबहुत्व	२८४
६९	संयमकाण्डकों, संयमासंयम-काण्डकों, सम्यक्त्वकाण्डकों और कषायोपशामनाकी वारसंख्या	२९४
७०	गुणश्रेणिनिर्जराका अल्पबहुत्व	२९५
७१	उपसंहारप्ररूपणामें प्रवाह्य व अप्रवाह्य स्वरूपसे आये हुए उपदेशों द्वारा प्ररूपणा अनुयोगद्वारका निरूपण	२९७
७२	ज्ञानावरण सम्बन्धी अजघन्य द्रव्यकी चार प्रकार प्ररूपणामें क्षपितकर्मांशिकके कालपरिहानि द्वारा उक्त प्ररूपणा	२९९
७३	गुणितकर्मांशिकके कालपरिहानि द्वारा अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा	३०६
७४	क्षपितकर्मांशिकके सत्त्वके आश्रित अज-घन्य द्रव्यकी प्ररूपणा	३०८
७५	गुणितकर्मांशिकके सत्त्वाश्रित अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा	३१२
७६	दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय सम्बन्धी जघन्य वेदनाकी प्ररूपणा	३१३
७७	उक्त तीन कर्मोंकी अजघन्य वेदना	३१४
७८	वेदनीय सम्बन्धी जघन्य वेदनाके स्वामीकी प्ररूपणा (सूत्र ७९-१०८)	३१६
७९	दण्ड, कपाट, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातोंका स्वरूप	३२०
८०	योगनिरोधका क्रम	३२२
८१	कृष्टिकरणविधान	३२३
८२	वेदनीय सम्बन्धी अजघन्य वेदनाकी प्ररूपणा	३२७
८३	क्षपितकर्मांशिकके सत्त्वका आश्रय कर अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा	"
८४	गुणितकर्मांशिकके सत्त्वका आश्रय कर अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा	३२९
८५	नाम व गोत्रके जघन्य एवं अजघन्य द्रव्यकी प्ररूपणा	३३०
८६	आयु कर्म सम्बन्धी द्रव्यके स्वामी की प्ररूपणा	"
८७	आयु कर्म सम्बन्धी अजघन्य द्रव्य वेद-नाकी प्ररूपणा	३३६
	अल्पबहुत्व	**३८५-३९४**
८८	जघन्य पद विषयक अल्पबहुत्व	३८५
८९	उत्कृष्ट पद " "	३९०
९०	जघन्य-उत्कृष्ट " "	३९२
	चूलिका	**३९५-५१२**
९१	योगका अल्पबहुत्व	३९५
९२	योगगुणकारका निर्देश	४०३
९३	उक्त अल्पबहुत्वालापके देशामर्शक होनेसे उसकी प्ररूपणा प्रमाण और अल्पबहुत्व इन ३ अनुयोगद्वारोंके द्वारा विशेष प्ररूपणा	४०३
९४	योगस्थानोंका अल्पबहुत्व	४०४

क्रम	विषय	पृष्ठ
९५	चौदह जीवसमासोंमें योगाविभाग-प्रतिच्छेदोंका स्वस्थान अल्पबहुत्व	,,
९६	उनका सर्व परस्थान अल्पबहुत्व	४०६
९७	उनका परस्थान अल्पबहुत्व	४०८
९८	उपपाद, एकान्तानुवृद्धि और परिणाम योगोंका अस्तित्व	४२०
९९	उपर्युक्त अल्पबहुत्वोंकी संदृष्टियां	४२१
१००	कर्मप्रदेशोंका अल्पबहुत्व	४३१
१०१	योगस्थानप्ररूपणामें १० अनुयोग-द्वारोंका उल्लेख	४३२
१०२	योगके विषयमें नामादि निक्षेपोंकी योजना	,,
१०३	स्थानके विषयमें नामादि निक्षेपों-की योजना	४३४
१०४	योगस्थानप्ररूपणाके अन्तर्गत १० अनुयोगद्वारोंका नामनिर्देश और उनका क्रम	४३८
१०५	अविभागप्रतिच्छेदप्ररूपणा (१)	४३९
१०६	वर्गणाप्ररूपणा (२)	४४२
१०७	गुरूपदेशके अनुसार प्ररूपणा आदि ६ अनुयोगद्वारोंके द्वारा प्रथमादि वर्गणाओं सम्बन्धी जीवप्रदेशोंका निरूपण	४४४
१०८	स्पर्धकप्ररूपणा (३)	४५२
१०९	अन्तरप्ररूपणा (४)	४५५
११०	स्थानप्ररूपणा (५)	४६३
१११	अनन्तरोपनिधा (६)	४८०
११२	परम्परोपनिधा (७)	४८८
११३	समयप्ररूपणा (८)	४९४
११४	वृद्धिप्ररूपणा (९)	४९७
११५	अल्पबहुत्व (१०)	५०३
११६	प्रदेशबन्धस्थानोंकी प्ररूपणा	५०५